19-01-2023

हादसों से बचने के लिए विशेष सुरक्षा प्रोटोकॉल का अनुपालन करें

चीनी उद्योग के लिए सुरक्षा संबंधी प्रोटोकॉल विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में आयोजित

डीटीएनएन

कानपुर। चीनी उद्योग के लिए सुरक्षा संबंधी प्रोटोकॉल विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में आयोजित की गयी। इस कार्यक्रम में विभिन्न चीनी उत्पादक राज्यों के प्रतिनिधियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

शर्करा अभियांत्रिकी के सहायक आचार्य एवं कार्यक्रम के संयोजक संजय चौहान ने अपने स्वागत सम्बोधन में कुछ चीनी कारखानों में हाल ही में हुये हादसों की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुये सुरक्षा उपायों के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि चीनी और ईथनोल दोनों ही अत्यंत ज्वलनशील होते हैं अतः इस प्रकार के हादसों से बचने के लिए विशेष सुरक्षा प्रोटोकॉल का अनुपालन करना चाहिए। उन्होंने हाल की कुछ घटनाओं की ओर ध्यान दिलाते हुये कहा कि चीनी के पैकिंग क्षेत्र में, जहाँ वातावरण में चीनी के कणों की सघनता अधिक थी और वहाँ पर्याप्त सुरक्षा उपायों का अनुपालन नहीं किया गया जिससे आग लगने की दुर्घटना हुई। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर के निदेशक नरेंद्र मोहन ने अपने सम्बोधन में मानव व मशीनरी दोनों को कोई क्षति न हो इसलिए सुरक्षा प्रथम पर बल दिया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक इकाई को अपना सुरक्षा मूल्यांकन करना चाहिए जिससे खतरे की पहचान कर उससे जुड़े सुरक्षा उपाय सुनिश्चित किए जा सके। सुरक्षा प्रबंधन के आधारभूत तत्वों में सुरक्षा उपकरणों का प्रावधान, कर्मचारियों का सुरक्षा संबंधी प्रशिक्षण, और हादसों के दौरान तत्काल लोगों को दुर्घटना क्षेत्र से बाहर निकालने का अभ्यास किया जाना शामिल है एवं इन बातों का कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि दुर्घटना संभावित क्षेत्रों के पर्याप्त मूल्यांकन और उन्हें रोकने संबंधी समुचित उपायों से इस प्रकार के हादसों से बचा जा सकता है।

डॉ. अर्कप्रभु साऊ, उपनिदेशक (चिकित्सा) एवं कार्यालय प्रमुख, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, कानपुर ने अपने व्याख्यान में %जोखिम बनाम खतरा% इस प्रकरण पर विस्तार से प्रकाश डाला और कहा कि चीनी कारखानों सहित किसी भी कारखाने में भौतिक, रासायनिक, जैविक, यांत्रिक और मनोवैज्ञानिक जोखिम मौजूद होते हैं और उनसे बचने हेतु निर्धारित मानकों का अनुपालन किया जाना चाहिए।

मेसर्स इस्जेक नोएडा के वरिष्ठ सुरक्षा विशेषज्ञ अमोल सेलोकर ने चीनी कारखानों और ईथनोल इकाइयों में उनके विभिन्न संयंत्रों के संचालन से जुड़े सावधानियों पर अपनी प्रस्तुति दी। मेसर्स डी सी एम श्रीराम लिमिटेड, दिल्ली के पूर्णकालिक निदेशक के के शर्मा ने मानव व्यवहार पर ध्यान केन्द्रित करते हुये बताया कि 96% दुर्घटनाएँ व चोट असुरक्षित मानव कृत्यों व लापरवाही से होती हैं। उन्होंने कहा कि हमारे पास सुरक्षा के नियम, सुरक्षा संबंधी पेशेवर और एक सुरक्षा व्यवस्था होती है जिनका तकनीकी, प्रक्रियागत और व्यावहारिक अनुसरण से हम शून्य दुर्घटना के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

अग्निशमन एवं अभियांत्रिकी राष्ट्रीय कॉलेज, नागपुर के प्राचार्य रमाकांत शर्मा तथा राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर के शर्करा प्रौद्योगिकी के सहायक आचार्य एस के त्रिवेदी ने चीनी कारखानों में दुर्घटना से बचाव के लिए के लिए निर्धारित अत्याधुनिक सुरक्षा संबंधी दिशानिर्देशों के बारे में बताया। ब्रजेश सिंह, तकनीकी अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत कर कार्यक्रम का समापन किया।

हादसों से बचने के लिए विशेष सुरक्षा प्रोटोकाल का अनुपालन हो

एनएसआई में चीनी उद्योग के लिए सुरक्षा संबंधी प्रोटोकाल विषय पर हुई राष्ट्रीय संगोष्ठी

संगोष्ठी में शामिल छात्र।

कानपुर, 18 जनवरी। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की ओर से चीनी उद्योग के लिए सुरक्षा संबंधी प्रोटोकाल विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने कहाकि मानव व मशीनरी दोनों को कोई क्षति न हो। इसलिए सुरक्षा प्रथम पर बल दिया गया है। उन्होंने कहाकि प्रत्येक इकाई को अपना सुरक्षा मूल्यांकन करना चाहिये जिससे खतरे की पहचान कर उससे जुड़े सुरक्षा उपाय सुनिश्चत किये जा सके। सुरक्षा प्रबंधन के आधारभूत तत्वों में सुरक्षा उपकरणों का प्रावधान, कर्मचारियों की सुरक्षा संबंधी प्रशिक्षण और हादसों के दौरान तत्काल लोगों को दुर्घटना क्षेत्र से बाहर निकलने का अभ्यास किया जाना शामिल है एवं इन बातों का कड़ाई से पालन किया जाना चाहिये। उन्होंने कहाकि दुर्घटना संभावित क्षेत्रों के पर्याप्त मूल्यांकन और उन्हे रोकने संबंधी समुचित उपायों से इस प्रकार के हादसों से बचा जा सकता है। कार्यक्रम के संयोजक संजय चौहान ने कहाकि कुछ चीनी कारखानों में हाल ही में हुए हादसों और सुरक्षा उपायों के म हत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहाकि चीनी और ईथनाल दोनों ही अत्यंत ज्वलनशील होते है। साथ ही हादसो से बचने के लिए विशेष सुरक्षा प्रोटोकाल का अनुपालन करना चाहिये। उन्होंने कहाकि चीनी पैकिंग क्षेत्र में, जहां वातावरण में चीनी के कणों की संघनता अधिक थी और वहा पर्याप्त सुरक्षा उपायो ा अनुपालन नहीं किया गया, जिससे दुर्घटनाएं हुई है।उप निदेशक डा. अर्कप्रभु साऊ ने कहाकि चीनी कारखानों सहित किसी भी कारखानों में भौतिक, रसायनिक, जैविक, यांत्रिक और मनोवैज्ञानिक जोखिम मौजूद होते है और उनसे बचने के लिए निर्धारित मानकों का अनुपालन किया जाना चाहिये। मेसर्स आईएसजीईसी नोएडा के वरिष्ठ सुरक्षा विशेषज्ञ अमोल सेलोकर ने चीनी कारखानों और ईथनोल इकाइयों में उनके विभिन्न संयंत्रों के संचालन से जुड़े सावधानियों पर अपनी प्रस्तुति दी। मेसर्स डीसीएम श्रीराम लिमिटेड, निदेशक के.के. शर्मा ने बताया कि 96 फीसदी दुर्घटनाएं व चोट असुरक्षित मानव कृत्यों व लापरवाही से होती है। सुरक्षा नियम, सुरक्षा संबंधी पेशेवर और एक सुरक्षा व्यवस्था होनी चाहिये। अग्निशमन एवं अभियांत्रिकी राष्ट्रीय कालेज, नागपुर के प्राचार्य रमाकांत शर्मा व आचार्य एस.के. त्रिवेदी ने चीनी कारखानों से दुर्घटना से बचाव, आधुनिक सुरक्षा संबं धी दिशा-निर्देश के बारे में जानकारियां दी। समापन पर तकनीकी अधिकारी ब्रजेश सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

चीनी मिलें करें सुरक्षा का मूल्यांकन

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। मानव और मशीनों की सुरक्षा पहले है। चीनी मिलों और डिस्टिलरी को अपनी सुरक्षा का मूल्यांकन करना चाहिए, जिससे खतरे की पहचान हो सके और सारे सुरक्षा के उपाय किए जाएं। यह बात राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने संस्थान में सुरक्षा संबंधी प्रोटोकॉल पर बुधवार को आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में कही। उन्होंने कहा सुरक्षा प्रबंधन में मॉक ड्रिल सबसे जरूरी है। कर्मचारियों का प्रशिक्षण, हादसे के दौरान बाहर निकलने का अभ्यास करना चाहिए। दुर्घटना संबंधित क्षेत्रों की पहचान की जाए, वहां सुरक्षा के बेहतर इंतजाम रखें। शर्करा अभियंत्रिकी के सहायक आचार्य संजय चौहान ने कहा कि चीनी और इथेनॉल दोनों ही ज्वलनशील हैं। हादसों से बचने

सेमिनार में बोलते एनएसआई निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन। अमृत विचार

के लिए सुरक्षा के प्रोटोकॉल की जरूरत है। चीनी की पैकेजिंग वाली जगहों पर सारे उपाय हों। श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के उपनिदेशक डॉ. एपी साहू के मुताबिक सुरक्षा मानकों का पालन नहीं करने पर दुर्घटनाएं होतीहैं। कारखानों में भौतिक, रासायनिक, जैविक, मनोवैज्ञानिक जोखिमहैं। सुरक्षा विशेषज्ञ अमोल सेलोकर ने चीनी और इथेनॉल इकाईयों में विभिन्न संयंत्रों के संचालन से जुड़ी सावधानियों की जानकारी दी। डीसीएम श्रीराम लिमिटेड के निदेशक केके शर्मा ने बताया कि 96 फीसद हादसे लापरवाही से होते हैं।

शर्करा संस्थान में चीनी उद्योग के लिए सुरक्षा संबंधी प्रोटोकॉल विषय पर संगोष्ठी

नगराज दर्पण समाचार

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में बुधवार को चीनी उद्योग के लिए सुरक्षा संबंधी प्रोटोकॉल विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर शर्करा अभियांत्रिकी के सहायक संजय चौहान ने कुछ चीनी कारखानों में हाल ही में हुये हादसों को लेकर कहा कि चीनी और ईथनोल दोनों ही अत्यंत ज्वलनशील होते हैं अतः इस प्रकार के हादसों से बचने के लिए विशेष सुरक्षा प्रोटोकॉल का अनुपालन करना चाहिए। उन्होंने कहा कि चीनी के पैकिंग क्षेत्र में जहाँ वातावरण में चीनी के कणों की सघनता अधिक थी और वहाँ पर्याप्त

सुरक्षा उपायों का अनुपालन नहीं किया गया जिससे आग लगने की दुर्घटना हुई।शर्करा संस्थान के निदेशक नरेंद्र मोहन ने कहा कि मानव व मशीनरी दोनों को कोई क्षति न हो इसलिए सुरक्षा प्रथम पर बल दिया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक इकाई को अपना सुरक्षा मूल्यांकन करना चाहिए जिससे खतरे की पहचान कर उससे जुड़े सुरक्षा उपाय सुनिश्चित किए जा सके। सुरक्षा प्रबंधन के आधारभूत तत्वों में सुरक्षा उपकरणों का प्रावधान, कर्मचारियों का सुरक्षा संबंधी प्रशिक्षण, और हादसों के दौरान तत्काल लोगों को दुर्घटना क्षेत्र से बाहर निकालने का अभ्यास किया जाना शामिल है एवं इन बातों का कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि दुर्घटना संभावित क्षेत्रों के पर्याप्त मूल्यांकन और उन्हें रोकने संबंधी समुचित उपायों से इस प्रकार के हादसों से बचा जा सकता है। डॉ. अर्कांप्रभु साऊ, अमोल सेलोकर, केके शर्मा, रमाकांत शर्मा, एसके त्रिवेदी, बृजेश सिंह, महेंद्र कुमार यादव आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

Risk factors in industry highlighted

PNS ■ KANPUR

Deputy Director (Medical) and Head, Ministry of Labour and Employment, Kanpur, Dr Arkaprabhu Sau, while addressing a one-day national seminar on 'Safety protocols for sugar industry' on Wednesday discussed risk and hazards and highlighted physical, chemical, biological, mechanical and psychological risk factors which prevailed in any industry, including sugar industry.Director, National Sugar Institute (NSI), Prof Narendra Mohan laid emphasis on 'safety first' to avoid any loss of man and material. He said while each unit should carry out risk assessment to identify and prevent work hazards, basics of safety management like provision of safety equipment, training of staff on training and conducting emergency evacuation drills were to be strictly followed. He said a thorough predictive and preventive maintenance can help in preventing such accidents.

In his welcome address, Assistant Professor of Sugar Engineering and convener Sanjay Chauhan highlighted the importance of the matter in view of accidents in some sugar factories.

He said considering that sugar and ethanol, both were highly inflammable, specified safety protocols needed to be followed to prevent any such mishap.

He then cited a few cases where fire accidents occurred in sugar packing area because of higher sugar dust concentration in atmosphere and non-compliance of adequate safety measures.

Senior safety expert from ISGEC, Noida, Amol Selokar, made a presentation on precautions needed to be taken in various unit operations in sugar factories and ethanol units. Whole Time Director, DCM Shriram Ltd, New Delhi, KK Sharma, focusing on human behavior informed that 96 per cent of injuries and accidents come from unsafe acts. He said as there were safety rules, safety professionals and a system to have safety and by taking technical, procedural and behavioural measures one can attain zero accidents.

Principal, National College of Fire Safety and Engineering, Nagpur, Ramakant Sharma, and Assistant Professor of Sugar Technology, NSI, SK Trivedi, highlighted recent guidelines for sugar industries to prevent accidents. Technical officer Brajesh Singh gave concluding remarks and proposed the vote of thanks.

एनएसआई में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चीनी उद्योग के लिए सुरक्षा संबंधी प्रोटोकॉल विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में आयोजित की गयी। इस कार्यक्रम में विभिन्न चीनी उत्पादक राज्यों के प्रतिनिधियों नेबड़ी संख्या में भाग लिया।

शर्करा अभियांत्रिकी के सहायक आचार्य एवं कार्यक्रम के संयोजक श्री संजय चौहान ने अपने स्वागत सम्बोधन में कुछ चीनी कारखानों में हाल ही में हुये हादसों की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुये सुरक्षा उपायों के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि चीनी और ईथनोल दोनों ही अत्यंत ज्वलनशील होते है अतः इस प्रकार के हादसों से बचने के लिए विशेष सुरक्षा प्रोटोकॉल का अनुपालन करना चाहिए। उन्होंने हाल की कुछ घटनाओं की ओर ध्यान दिलाते हुये कहा कि चीनी के पैकिंग क्षेत्र मेंए जहाँ वातावरण में चीनी के कणों की सघनता अधिक थी और वहाँ पर्याप्त सुरक्षा उपायों का अनुपालन नहीं किया गया जिससे आग लगने की दुर्घटना हुई। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर के निदेशक श्री नरेंद्र मोहन ने अपने सम्बोधन में मानव व मशीनरी दोनों को कोई क्षति न हो इसलिए ष्सुरक्षा प्रथमष् पर बल दिया।उन्होंने कहा कि प्रत्येक इकाई को अपना सुरक्षा मूल्यांकन करना चाहिए जिससे खतरे की पहचान कर उससे जुड़े सुरक्षा उपाय सुनिश्चित किए जा सकें। सुरक्षा प्रबंधन के आधारभूत तत्वों में सुरक्षा उपकरणों का प्रावधानए कर्मचारियों का सुरक्षा संबंधी प्रशिक्षणए और हादसों के दौरान तत्काल लोगों को दुर्घटना क्षेत्र से बाहर निकालने का अभ्यास किया जाना शामिल है एवं इन बातों का कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि दुर्घटना संभावित क्षेत्रों के पर्याप्त मूल्यांकन और उन्हें रोकने संबंधी समुचित उपायों से इस प्रकार के हादसों से बचा जा सकता है।

डॉण् अर्काप्रभु साऊए उपनिदेशक ;चिकित्साद्ध एवं कार्यालय प्रमुखए श्रम एवं रोजगार मंत्रालयए कानपुर ने अपने व्याख्यान में ष्जोखिम बनाम खतराष्ट्स प्रकरण पर विस्तार से प्रकाश डाला और कहा कि चीनी कारखानों सहित किसी भी कारखाने में भौतिकए रासायनिकए जैविकए यांत्रिक और मनोवैज्ञानिक जोखिम मौजूद होते हैं और उनसे बचने हेतु निर्धारित मानकों का अनुपालन किया जाना चाहिए।

मेसर्स [illegible]नोएडा के वरिष्ठ सुरक्षा विशेषज्ञ श्री अमोल सेलोकर ने चीनी कारखानों और ईथनोल इकाइयों में उनके विभिन्न संयंत्रों के संचालन से जुड़े सावधानियों पर अपनी प्रस्तुति दी। मेसर्स डीसीएम श्रीराम लिमिटेडए दिल्ली के पूर्णकालिक निदेशक श्री के के शर्मा ने मानव व्यवहार पर ध्यान केन्द्रित करते हुये बताया कि 96ः दुर्घटनाएँ व चोट असुरक्षित मानव कृत्यों व लापरवाही से होती है। उन्होंने कहा कि हमारे पास सुरक्षा के नियमए सुरक्षा संबंधी पेशेवर और एक सुरक्षा व्यवस्था होती है जिनका तकनीकीए प्रक्रियागत और व्यावहारिक अनुसरण से हम शून्य दुर्घटना के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। अग्निशमन एवं अभियांत्रिकी राष्ट्रीय कॉलेजए नागपुर के प्राचार्य श्री रमाकांत शर्मा तथा राष्ट्रीय शर्करा संस्थानए कानपुर के शर्करा प्रौद्योगिकी के सहायक आचार्य श्री एस के त्रिवेदी ने चीनी कारखानों में दुर्घटना से बचाव के लिए के लिए निर्धारित अत्याधुनिक सुरक्षा संबंधी दिशानिर्देशों के बारे में बताया। श्री ब्रजेश सिंहए तकनीकी अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत कर कार्यक्रम का समापन किया।